

'चलिलाई कलां'

40 दिनों की सबसे कठोर सर्दियों की अवधि में से एक, जिसे 'चलिले/चलिलाई कलां' (Chillai Kalan) कहा जाता है, कश्मीर में शुरू हो गई है।

प्रमुख बटु

■ चलिलाई कलां के बारे में:

- यह हर साल 21 दिसंबर से 29 जनवरी तक कश्मीर में सबसे कठोर सर्दियों की अवधि होती है।
- 'चलिलाई कलां' एक फारसी शब्द है जिसका अर्थ है 'बड़ी सर्दी'।
- चलिलाई कलां के बाद 20 दिनों की लंबी चलिलाई खुरद (छोटी सर्दी) होती है जो 30 जनवरी से 18 (Chillai Baccha) तक होती है और इसके बाद 10 दिनों तक चलने वाली चलिलाई बच्चा (बेबी कोल्ड) अवधि जो 19 फरवरी से 28 फरवरी तक होती है।
- 40 दिनों की अवधि कश्मीरियों के लिये बहुत कठिनाइयाँ लेकर आती है क्योंकि इस दौरान तापमान में भारी गिरावट आती है, जिससे यहाँ की प्रसिद्ध डल झील सहित जलाशय जम जाते हैं।
- इन 40 दिनों के दौरान बर्फबारी की संभावना सबसे अधिक होती है और तापमान में काफी गिरावट आती है। घाटी में न्यूनतम तापमान हमिंक बटु से नीचे बना होता है।

■ कश्मीरियों के दैनिक जीवन पर प्रभाव:

- फेरन (कश्मीरी पोशाक) और कांगेर (Kanger) नामक पारंपरिक फायरिंग पॉट का उपयोग बढ़ जाता है।
- तापमान शून्य से नीचे होने के कारण इस दौरान नल की पाइपलाइन में पानी आंशिक रूप से जम जाता है और वशिव प्रसिद्ध डल झील भी जम जाती है।
- कश्मीरी हरिसा (Harissa) के साथ जश्न मनाते हैं जो चावल में मश्रूति सौंफ, इलायची, लौंग एवं नमक जैसे मसालों के स्वाद के साथ पतले मटन से बना पकवान होता है।
- इसके अलावा वे अक्सर सूखी सब्जियों का सेवन करते हैं क्योंकि भारी बर्फबारी के बाद सड़कों के अवरोध होने के कारण ताज़ा सब्जियों की आपूर्ति में कमी आती है।

स्रोत: द हट्टू